राष्ट्रीय सम्मेलन एवं प्रदर्शनी

विषय : **दिव्य-औषधीय पौधे, उनसे निर्मित औषधीय उत्पाद, पंचगव्य तथा उनका समग्र ग्रामीण विकास में महत्त्व**

स्थान : **विज्ञान भवन,** मौलाना आजाद रोड, नई दिल्ली-1

दिनांक : 21, 22 फरवरी, 2014, दिन शुक्रवार, एवं शनिवार

आयोजक : ग्रामीण क्षेत्रीय विकास परिषद
2, विज्ञान लोक (आनंद विहार) दिल्ली-110092

सह-आयोजक : (प) वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसन्धान परिषद,
वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसन्धान विभाग, भारत सरकार
(पप) आयुश विभाग, स्वास्थ्य मंत्रालय, भारत सरकार

संयुक्तआयोजक :
1. जैव प्रौद्योगिकी विभाग, भारत सरकार
2. बृहस्पति देव त्रिगुन (पद्मविभूषण अवार्डी) ट्रस्ट
3. भारत विकास परिषद, 4. आरोग्य भारती
5. पतंजलि योग पीठ, 6. त्यागी ब्राह्मण समाज
7. सोइल कंजरवेशन सोसाइटी आफ इंडिया

☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆

NATIONAL CONFERENCE AND EXHIBITION

Subject : **DIVINE MEDICINAL PLANTS, PLANTS BASED MEDICINAL PRODUCTS, PANCHAGAVYA AND THEIR ROLE IN INTEGRATED RURAL DEVELOPMENT**

Venue : Vigyan Bhawan, Maulana Azad Road, New Delhi-110001.

Date : 21, 22 February, 2014; Friday & Saturday

Organizer : **Council for Development of Rural Areas**
2, Vigyan Lok, (Anand Vihar) Delhi-110092.

Co-organisers : (1) Council of Scientific & Industrial Research(CSIR),
Department of Scientific & Industrial Research, Govt.of India
(2) Department of AYUSH, Ministry of health, Govt.of India

Joint Organizers:

1. Dept. of Bio-Technology,Govt.of India
2. Brahaspati Dev Triguna (Padambhushan Awardee) Trust
3. Bharat Vikas Parishad, New Delhi 4. Arogya Bharati
5. Patanjali Yog Peeth 6. Tyagi Brahmin Samaj
7. Soil Conservation Society of India

दिव्य-औषधीय पौधे, उनसे निर्मित औषधीय उत्पाद, पंचगव्य, तथा उनका समग्र ग्रामीण विकास में महत्त्व

विश्व के सृजनहार ने यह 'वनस्पति जगत' मानव जाति एवं अन्य जीव धारियों के जन्म लेने से पूर्व ही उपहार में दे दिया था। इन पौधों से निर्मित औषधीयां, मानव सभ्यता के उदित होते ही प्राणी जगत की स्वास्थ्य रक्षा में एक अहम् भूमिका निभाती आ रही हैं। वेदों में वर्णित औषधीय पौधों एवं योग की महत्ता का विवरण सृष्टि के प्रारम्भ से ही अनेक ग्रन्थों में मिलता है। यह माना जाता है कि भारत के योगी, तपस्वी, ऋषि, मुनियों ने दिव्य औषधीय पौधों के भेषजीय गुणों का ज्ञान ब्रह्मा, विष्णु, शिव, इन्द्र, वरूण आदि देवताओं से प्राप्त किया। तदोपरान्त भारत के मनीषियों ने इस ज्ञान को चहुंमुखी अनुसन्धान और विकास कर चरमोत्कर्ष पर पहुँचाया और यह निष्कर्ष निकाला है कि वनस्पति आधारित औषधीयां मनुष्य को केवल रोगों से ही मुक्त नहीं करती वरन् उसे उसकी अति मानसी चेतना में भी स्थापित कर देती हैं।

पेड़ पौधों पर आधारित यह औषधीय ज्ञान स्वस्थ एवं निरोग रहने के लिए ही नहीं, वरन् ऐश्वर्य प्राप्ति की पराकाष्ठाओं की सम्भावनाओं से भी ओत प्रोत था। परन्तु यह कैसी विडम्बना है कि भारत के इस प्राचीन औषधीय ज्ञान पर हजारों साल से अज्ञान का अन्धकार छाया रहा। अब इस ज्ञान को पुनः प्रकाशित करने का समय आ गया है, और हम सभी लोगों का कर्तव्य है कि हम इस ज्ञान को जन-जन तक पहुँचायें।

औषधीय पौधों पर आधारित उपचार पद्धति बीमारियों को समूल समाप्त करने के अपने विलक्षण गुणों के कारण भारत के अतिरिक्त कोरिया, चीन, जापान, फ्रांस, जर्मनी, नीदरलैंड आदि देशों में बहुत प्रचलित है। इस प्रकार की औषधियां निर्मित करने वाले इन देशों की औद्योगिक कम्पनियां सारे विश्व के बाजार पर छायी हुई हैं। भारत, जहां पर यह प्राकृतिक वन सम्पदा प्रचुर मात्रा में उपलब्ध है, अभी विश्व बाजार में बहुत पिछड़ा हुआ है। इस क्षेत्र में यदि हम अपने सभी संसाधनों का दोहन कर औषधीय निर्माण की गुणवत्ता पर विशेष ध्यान दें, तो भारत विश्व का अग्रणीय देश बन जायेगा। ग्रामीण क्षेत्रीय विकास परिषद अपने सामर्थ्यनुसार इस क्षेत्र में कार्य करने के लिए 1978 से ही प्रयासरत है।

ग्रामीण क्षेत्रीय विकास परिषद का मुख्य उद्देश्य ग्रामीण भारत के आर्थिक विकास में चहुंमुखी योगदान करना है, जिसके लिये कृषि विज्ञान, ग्रामीण प्रौद्योगिकी, स्वास्थ्य विज्ञान, पर्यावरण आदि क्षेत्रों में उपलब्ध जानकारियों को वैज्ञानिक सम्मेलन, प्रशिक्षण शिविर तथा अन्य कार्यक्रमों द्वारा जन जन तक पहुंचाना है। इस कार्य को सुचारु रूप से चलाने के लिए ग्रामीण क्षेत्रीय विकास परिषद 'ग्राम विकास ज्योति' पत्रिका का प्रकाशन कर रहा है। ऐसे कार्य इस संस्था द्वारा 1978 से लगातार किए जा रहे हैं। इसी संदर्भ में **''औषधिय वनस्पतियों के पूर्ण दोहन और विकास द्वारा रोजगार के संसाधन, निर्यात और सबके लिये स्वास्थ्य''** विषय पर एक सम्मेलन तथा प्रदर्शनी, प्रगति मैदान नई दिल्ली में फरवरी 1997 में आयोजित की गई थी।

इस कार्यक्रम की प्रेरणा से सारे देश में 'औषधिय पौधे तथा उनसे निर्मित औषधियों से सम्बन्धित' एक जागरण की लहर पैदा हो गई। यहां तक कि भारत सरकार तथा अन्य विभिन्न संस्थाओं ने इस विषय को और आगे बढ़ाने के लिये इस तरह के सम्मेलन और प्रदर्शनियां लगानी प्रारम्भ कर दीं। तदन्तर भारत सरकार ने नेशनल मैडीसनल प्लान्टस बोर्ड तथा नेशनल बायोरिसोर्स डवलपमैन्ट बोर्ड की स्थापना की।

इस कार्यक्रम की उपयोगिता को दृष्टिगोचरित करते हुए 'ग्रामीण क्षेत्रीय विकास परिषद' एवं वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसन्धान परिषद भारत सरकार ने अन्य कुछ संस्थाओं के सहयोग से **''दिव्य-औषधिय पौधे, उनसे निर्मित औषधिय उत्पाद, पंचगव्य**

तथा उनका समग्र ग्रामीण विकास में महत्त्व'' विषय पर, एक सम्मेलन तथा प्रदर्शनी, विज्ञान भवन, नई दिल्ली में, 21, 22 फरवरी, 2014 को आयोजित करने का निर्णय लिया है।

ऐसी आशा ही नहीं वरन पूर्ण विश्वास है कि भारत की आयुर्विज्ञान की यह प्राचीन पद्धति अपने ज्ञान की दिव्य रश्मियों से जन जन को स्वस्थ रखने में एक अद्‌भुत भूमिका निभाने में सक्षम है। परन्तु यह तभी सम्भव है, जब हम इसकी जानकारी घर-घर में प्रत्येक मनुष्य तक पहुंचाने के लिये दृढ़ संकल्प हों, हमें औषधिय पौधों के प्रयोग के लिये एक वातावरण बनाना है, लोगों को समझाना है कि शरीर में पनप रही सभी बीमारियों का निवारण इन पौधों के उपयोग से निश्चित ही हो जायेगा। पौधों के प्रयोग की विधियों का प्रचार करना है जैसे तुलसी का पौधा अपने दिव्य गुणों के कारण घर-घर में प्रचलित है। ऐसे औषधिय पौधों को घरों के आंगन में उगाना, उनके प्रयोग की विधि से सबको अवगत करना, टी.वी. रेडियो तथा विद्यार्थियों के पाठ्यक्रम द्वारा इन पौधों के गुणों को प्रचारित करना आवश्यक है। यह कैसी विडम्बना है कि इन अत्यन्त उपयोगी पौधों के कृषिकरण के लिए तथा सामान्य जन द्वारा उपयोग में लाने के लिए इनके प्रचुर मात्रा में न तो बीज उपलब्ध हैं और न ही पौधे। इस कमी को दूर करने के लिए हमें अन्य वैज्ञानिक उपाय जैसे टिश्यू कल्चर लैब की स्थापना और पौधों के प्रोटोकोल के लिए अनवरत अनुसन्धान करने होंगे क्योंकि उच्चगुणों से भरपूर औषधियां तैयार करने के लिए पौधों की गुणवत्ता को बढ़ाना वैज्ञानिकों के लिये चुनौतीपूर्ण कार्य है। हमें बीज बैंक स्थापित करने होंगे। कृषिकरण और सैमी प्रौसेसिंग की विधियों की जानकारी देने के लिए नौजवानों के लिये प्रशिक्षण शिविर भी लगाने होंगे। किसानों द्वारा उनकी कृषि उपज को उचित मूल्य के लिये बाजार भी उपलब्ध कराना होगा। जिससे हमारे किसान भाइयों की आर्थिक दशा में भी सुधार सुनिश्चित हो सके।

प्रकृति ने भारत की भूमि को भिन्न-भिन्न प्रकार की जलवायुओं से आच्छादित किया हुआ है और इसी कारण यहां अनेकों प्रकार के औषधिय पौधे अपनी सम्पूर्ण गुणवत्ता के साथ पल्लवित और पुष्पित होते हैं। यह तो ईश्वर का ही वरदान है कि भारत को हिमालय पर्वत मिला जहाँ अनगिनत दिव्य औषधिय पौधों का भण्डार है। इस प्रकार दिव्य औषधिय पौधों के लिए भारत एक अनुपम स्थान है। परन्तु यह कैसी विडम्बना है कि विभिन्न प्रकार की साध्य एवं असाध्य बीमारियों के उपचार के लिए इन अद्‌भुत पौधों का दोहन बड़ी मात्रा में भारत ही नहीं अपितु विश्व के अनेक देश कर रहे हैं जिससे इन पौधों की उपलब्धता अत्यन्त क्षीण हो गई है। ऐसे विलक्षण पौधों के जीवन को सुरक्षित रखना हमारा अत्यन्त पावन कर्त्तव्य है।

ग्रामीण क्षेत्रों में औषधीय पौधों के कृषिकरण के लिए प्रभावशाली योजनायें बनानी होंगी जिसमें जैविक तथा और्गेनिक खाद का प्रयोग हमारी प्राथमिकता होनी चाहिये जिसके लिए गौ अनुसन्धान तथा गौ पालन को बढ़ावा देना होगा। ऋषि मुनियों ने गाय को आर्ष ग्रंथों में सर्व: देवमयी माता बताया है। उससे प्राप्त पांच पदार्थ गोबर, गोमूत्र, दूध, दही, घी पंच गव्य कहे जाते हैं। आयुर्वेद ग्रन्थों में कृषिकरण, स्वास्थ्य रक्षा एवं चिकित्सा के लिए पंचगव्य का वर्णन है। पंचगव्य आयुर्वेद औषधि निर्माण में प्रमुखता से उपयोग में आते हैं। ग्रामीण जीवन में तो गाय हमारी कृषि संस्कृति का आधार रही है। क्योंकि आधिदैविक दृष्टि से गाय का असाधारण महत्त्व है। इस संदर्भ में नन्दनी, कामधेनु नामक गायों की कहानियां आज भी प्रसिद्ध हैं। हिन्दुओं के ईश्वर माने जाने वाले कृष्ण ने तो गायों को पूज्यनीय श्रेणी प्रदान की। यजुर्वेद में तैत्तरीय ऋषि वर्णन करते हैं कि इस राष्ट्र में विपुल दूध देने वाली गायें उत्पन्न हो, बलवान सांड हों, औषधि व वनस्पति हों, तभी पराक्रमी तेजस्वी प्रजा का निर्माण होगा।

गाय के गोबर से कंपोस्ट खाद, गोमूत्र + नीम + अन्य जड़ी बूटियों से श्रेष्ठ कीट नियंत्रक, गोबर गोमूत्र एवं गुड से अमृतपानी किसानों के लिए लाभकारी है। इस प्रकार गाय के भिन्न-भिन्न अवयवों से केंचुआ खाद, नडेप कम्पोस्ट खाद, अणु खाद और समाधि खाद आदि प्राप्त होते हैं। यह सभी पौधों के लिए अमृत तुल्य है। अब तो गोमूत्र अर्क के लिए अन्तर्राष्ट्रीय पेटैन्ट भी मिल गया है। इस प्रकार

आयुर्वेद मनीषियों ने गोमूत्र, गोदूध, गोतक्र, गोघृत तथा गो गोबर को मनुष्य की अनेक बीमारियों के निराकरण के लिए अत्यन्त उपयोगी बताया है। इस सम्मेलन में इन विषयों के बारे में गम्भीरता से विचारों का आदान प्रदान होगा।

प्राय: ऐसा देखा गया है कि हमने अपनी इस वेश कीमती ईश्वर प्रदत्त चेतना से परिपूर्ण धरोहर को अपने स्वार्थ के लिये बड़ी निर्दयता के साथ दोहन किया है और इनके प्रति हमारी सहानुभूति प्राय: नगन्य रही है। जो पौधे हमें स्वस्थ रखने के लिये अपने जीवन की आहुति दे देते हैं वे तो हमारी आराधना के पात्र हैं। हमें तो उनके प्रति अपनी अन्तरात्मा से प्रेम और श्रद्धा प्रकट करनी चाहिये। हमारी इस मात्रभूमि ने हमें औषधिय पौधे प्रदान कर केवल रोगों से ही मुक्त नहीं किया है वरन् उच्च कोटि की एक मानसी चेतना को प्रस्फुटित कर प्राणशक्ति को शरीर के प्रत्येक कोश में प्रवाहित किया है और यही सन्देश हमें समाज में पहुंचाना है।

समाज कल्याण और देश कल्याण के लिये इन सभी उद्देश्यों को कार्यान्वित करने के लिए इस सम्मेलन में निम्नलिखित उपविषयों को गहन चर्चा के लिए चुना गया है।

१. सबके लिए स्वास्थ्य:-

1.1 भिन्न-भिन्न बीमारियों में औषधिय पौधों की उपयोगिता तथा उनके प्रयोग की विधियां,

1.2 पौधों को घरों में उगाने की तकनीकि, और उनका प्रचार, प्रसार और प्रशिक्षण।

२. उच्च गुणवत्ता वाले बीज और पौधे, कच्चा माल तथा इसका प्रोसेसिंग

2.1 औषधिय पौधों की पहचान तथा उनकी गुणवता के लिए अनुसन्धान तथा विकास।

2.2 औषधिय पौधों के लिए टिश्यूकल्चर लैब की स्थापना की आवश्यकता।

2.2.1 पौधों को तैयार करने के लिए प्रोटोकोल पर अनुसन्धान तथा विकास।

2.2.2 कृषिकरण के लिए तथा औषधिय पौधों को परिवार में उगाने के लिए पौधों को तैयार करना।

2.2.3 औषधि निर्माण के लिए उच्च गुणवता का कच्चा माल उपलब्ध कराना।

2.2.4 विलुप्त होते विलक्षण औषधिय पौधों का संरक्षण।

३. पंचगव्य का मनुष्य को स्वस्थ रखने में तथा औषधीय पौधों के कृषिकरण में महत्त्व

3.1 भिन्न-भिन्न जलवायुओं के क्षेत्र में औषधिय पौधों का जैविक/आर्गेनिक कृषिकण तथा उसके लिए गौवंश का योगदान और उनके पालन पोषण का प्रबन्धन।

3.2 पंच गव्य का मनुष्य को स्वस्थ रखने में योगदान।

४. निजि उद्योगों की भूमिका

4.1 औषधिय पौधों द्वारा ग्रामीणों के आर्थिक विकास में निजि उद्योगों की भूमिका।

4.2 उच्च गुणवता की औषधियां तैयार करने की विधियों का निजि उद्योगों द्वारा अनुसंधान तथा विकास।

५. औषधीय पौधों में दिव्यता।

5.1 औषधिय पौधों में ईश्वर की अति मानसी चेतना की उपस्थिति का अनुभव करना, उनकी दिव्यता तथा आध्यात्मिकता की उपासना करना, रोगों के निराकरण में उनमें प्रवाहित प्राण शक्ति को पहचानना।

5.2 औषधीय पौधों के शोषण से संरक्षण के लिए समाज की सोच में परिवर्तन पैदा करना।

६. खेत और खलियान स्तर पर रोल मांडल का प्रदर्शन

6.1 कृषिकरण तकनीकि, सैमी प्रौसेसिंग, भंडारण संरक्षण, क्रय-विक्रय प्रबन्धन, नवयुवकों के लिये रोजगार/स्वरोजगार/व्यापार के लिए रोल माडल प्रदर्शन।

७. अतिचिन्तनीय एवं विचारणीय विषय

7.1 आर्थिक दृष्टि से अलाभकारी कृषि एवं सामाजिक प्रतिष्ठा के सबसे निचले पायदान पर पहुँच गई कृषि से वर्तमान किसानों का मोह भंग।

7.2 कृषि विश्वविद्यालयों में शिक्षित ग्रामीण नवयुवकों का कृषि छोड़कर शहर की ओर पलायन करने से गांव में अच्छी योग्यता एवं दक्षता की लगातार बढ़ती कमी।

उपरोक्त विषयों को ध्यान में रखकर यह निर्णय लिया गया है। कि इस राष्ट्रीय गोष्ठी में वनस्पति आधारित औषधियों के निर्माणकर्ता, औषधियों के लिए वनस्पति उपलब्ध कराने वाले व्यापारी वर्ग, इससे सम्बन्धित कृषक वर्ग, आयुर्वेदिक, यूनानी, होम्योपैथी परिषदों के प्रतिनिधि, सी एस आई आर, आई सी एम आर, आइ सी ए आर तथा अन्य संस्थाओं के वैज्ञानिक, कुछ प्रबुद्ध सरकारी अधिकारीगण एवं वैद्य तथा हकीमों को एक मंच पर एकत्रित कर परस्पर वार्ता की जाए और सभी व्यवधानों को दूर कर ऐसी नीति का निर्धारण किया जाए जिससे हमारा वनस्पति आधारित औषधिय उद्योग समृद्ध हो सकें।

स्मारिका : इस अवसर पर सम्मेलन से सम्बन्धित प्राप्त विषयों का सारांश तथा अन्य विषयों की जानकारी देते हुए एक स्मारिका का प्रकाशन किया जा रहा है। जिसका विमोचन महामहिम राष्ट्रपति जी द्वारा किया जायेगा। इस स्मारिक के प्रकाशन के लिए आप अपने सन्देश एवं विज्ञापन ई-मेल अथवा टाइप कापी भिजवा दें। इस स्मारिका में छापने के लिए आप अपने विषय से सम्बन्धित लेख भेजें।

भेजने का पता : सम्मेलन स्मारिका, ग्रामीण क्षेत्रीय विकास परिषद
2, विज्ञान लोक, (आनन्द विहार) दिल्ली-110092
Email : srishandilya@rediffmail.com, sdgarg02@gmail.com

औषधिय वनस्पति आधारित एक 'सार-संग्रह' का प्रकाशन : सम्मेलन विषयों से संबंधित औषधिय पौधों पर एक सार-संग्रह प्रकाशित करने का निर्णय लिया गया है। इस क्षेत्र के सभी विशेषज्ञों से सविनय निवेदन है कि अपने लेख, पेपर, संक्षिप्त रूप में अपने विचारों का संकलन आदि, हिन्दी अथवा अंग्रेजी भाषा में टंकित करा ई मेल द्वारा अथवा टाइप कापी भिजवा दें।

भेजने का पता : संपादक, औषधिय वनस्पति सार-संग्रह
2, विज्ञान लोक, (आनन्द विहार), दिल्ली-110092
Email : devendra1938@gmail.com

विशेष : ग्रामीण क्षेत्रीय विकास परिषद पिछले 25 साल से 'ग्राम विकास ज्योति' पत्रिका का प्रकाशन कर रहा है। यह पत्रिका कृषि विज्ञान, ग्रामीण प्रौद्योगिकी एवं अन्य जन कल्याण के विषयों को सफलतापूर्वक ग्रामीणांचल में प्रसारित कर रहा है।

DIVINE MEDICINAL PLANTS, PLANTS BASED MEDICINAL PRODUCTS, PANCHAGAVYA AND THEIR ROLE IN INTEGRATED RURAL DEVELOPMENT

Medicinal plants and their products have been used by mankind in health care since the inception of civilization. India has contributed to their development since Vedic period and their subsequent development by sages like Chark, Sushrut, Madhav, Agasthya and others. Its development through Ayurveda and Siddha has also contributed to evolution of Unani & Chinese Medicine as well as Western Allopathic system where these drugs are used in preventive, promotive as well as curative aspects of health care. Owing to the established advantages of the herbal medicines, these are highly popular, beside India, in Korea, China, Japan, Nepal, Bhutan, Netherlands, France, Germany and many other countries. A large number of pharmaceutical firms from these countries are fast capturing the market of drugs based on plants. Unfortunately, India is still not able to utilize the opportunities adequately and exploit its hidden business potential.

India has an enormous variety of medicinal plants. We have to create an environment for use of medicinal plants and medicines derived from plants at the homes of the people for their various ailments. For this purpose, availability of medicinal plants to the community and the knowledge of their use for remedy of different diseases are necessary for which people have to be trained to maintain such plants and also be aware of the correct use of plant materials and their safe doses. The widespread medicinal use of the plant, Tulsi, in most homes in the country, shows how some essential medical help can be extended to the deprived sections of the society through medicinal plants grown at home. Their

organized cultivation, preservation, processing and marketing can create employment opportunities for millions, especially in the rural areas which today witness migration of young aspirants to urban areas for jobs. Cultivation of medicinal plants by farmers along with their traditional farming and their semi-processing at the farm level can create employment, business, and trading opportunities for rural youth and may certainly boost the income of farmers. Thereby bringing prosperity to the farmers and improve health of their family members. However, farmers have to be trained to cultivate the herbs. Unfortunately farmers sometime face great difficulty for marketing the herbs, due to lack of farmer-friendly marketing systems in rural areas.

The Prime objective of the Council for Development of Rural Areas is economic and social development of Rural areas for which the Council organizes seminars, conferences, and training camps, and also publishes the journal, Gram Vikas Jyoti.The theme of such activities revolves around dissemination of scientific & technological information appropriate for rural industries, skill development of artisans and handicrafts, agriculture, medicinal & aromatic plants , bio-industrial watershed management etc. Accordingly, the Council for Development of Rural Areas had organized a conference and exhibition on "Strategy for Development of full potential of phytomedicines for employment generation, Export and Health for all" at Pragati Maidan, New Delhi in 1997. The impact of this conference brought revolutionary development in the field of Medicinal Plants, especially in increasing awareness on the benefits of Ayurveda in the country.

Taking into consideration the impact of the 1997 conference on research ,Industry, trade and vaidya Community, the Council for Development of Rural Areas has decided to further intensify its activities in this direction in more directed manner on medicinal plants and plants based drugs in improving and empowering rural economy and thus has decided to organize a second Conference and Exhibition on **DIVINE MEDICINAL PLANTS, PLANTS BASED MEDICINAL PRODUCTS, PANCHAGAVYA AND THEIR ROLE IN INTEGRATED RURAL DEVELOPMENT,** at VIGYAN BHAWAN,Maulana Azad Road,New-Delhi,on 21st &22nd Feb.2014.

The 2nd Conference is expected to catalyze the percolation of knowledge and awareness of the important theme, and move to the grass root level (farmers & villagers) of the society. Thus the use of medicinal plants and plants based products should become normal practice in daily life of the people to keep them free from diseases and ailments. The Promotion of medicinal plants will help the farming community to earn higher incomes and net profits, which are missing at present for most of the farmers. The conference will also evolve strategies for development of drugs from these plants to promote indigenous herbal drug industry, export of quality drugs, and promotion of interest of farmers and tribals who are engaged in cultivation and collection of medicinal plants.

In order to grow medicinal plants at homes, and to promote its cultivation by farmers it is necessary to make high quality planting material available easily and in abundance to both, the community as well as to the farmers. For this purpose, Tissue Culture Labs need to be established, seed depots and plant material banks will have to be created as genuine source of high quality planting material. Special kits of some select medicinal plants need to be designed for supply of planting material at homes for families.

For Indian herbal industry to compete in the international market, the plant based drug manufacturers will have to use high quality raw material with high bio-active content , and adopt prescribed ayurvedic processes for manufacture of herbal drugs with inputs of modern technologies. This is a challenge for agriculture universities, R&D scientists and manufacturers. Here private sector has an enormous role to play in coordination with R&D labs and agricultural universities to produce high quality genuine herbal drugs keeping in view the efficacy and safety aspects.

It is very well known that Cow and Agriculture are inseperable for the Indian farmer. The Panchagavya is the blend of Cow's milk, curd, ghee, urine and dung. They contain vitamins and minerals.

Charak Samhita and Sushrut and other books have mentioned their use in more then 3500 formulae for medicines and in treatment of 110 diseases.

The real challenge at present is to translate the knowledge on medicinal plants, cultivation, processing and marketing to be profitable to the farmer. For this purpose, real life economically viable demonstration models at the farm level will have to be created which can become a training ground for the farmers. These Models need to be economically viable, and at a scale to become self- sustainable and replicable.

The Farmer has to be brought at the centre stage of all activities .In order to boost income level of the farmers ,besides transfer of technological knowledge to the farmers, the management, and marketing activity for supply of raw materials & products within the country and for exports has to be done directly by the farmers making utmost use of information technology. This is the real need of the hour.

Why is it that the graduates passing out from Agricultural Universities are reluctant to stay at the villages? Can we find a solution to stop this migration? Perhaps some Agricultural Collages would have to become Agri-Businesss Collages to educate and train the RURAL YOUTH as AGRI-BUSINESS ENREPRENEURS. Agricultural Universities should takeup this key issue of migration and develop suitable Human Resource Development Model as Agri-Business Entreprenures.

India is blessed with Himalayan range as a God given asset for natural habitat of precious herbal plants. It has been observed that these precious natural plant resources are being over exploited and many medicinal plants have become extinct. It is important to realise that the man has to become friendly with plants, and in place of consumerist approach, it is necessary to understand that health and happiness can also be gained by preserving, protecting , serving and worshiping the divine and spiritual medicinal plants, which inspires to lead a divine life. To propagate this truth & message in the society, we will have to practically demonstrate that Divinity can be infused in the human being through plants . To demonstrate this, the Medicinal plant has to be made healthiest, highly pure ,and Divine like.

To achieve the above mentioned objectives with beneficial results, the following sub-themes have been proposed:

1. Health for all

1.1 Benefits of medicinal plants & the methods of their growing at home, their use in day to day life for family health and, primary health care.

1.2 To disseminate the knowledge through education and training in schools and in community.

2. High quality planting material, raw material and its processing.

2.1 R&D work to authenticate and improve the medicinal properties of the plants

2.2 Organic farming of medicinal plants in various agro-climatic zones by marginal farmers.

2.3 Tissue culture labs for medicinal plants

2.3.1 Development of protocols

2.3.2 Developing high quality planting material for cultivation for farmers and for families.

2.3.3 Developing high quality raw material for manufacturing industries

2.3.4 Saving rarest plants from extinction.

2.4 Post harvesting technology for their semi-processing at farmers level, and assured marketing at appropriate price.

3. Panchgavya

3.1 Role of Panchgavya in medi-culture

4. Role of private sector

4.1 Role of private sector in rural development through Medicinal Plants.

4.2 Probing methods and techniques for manufacturing high quality herbal medicines.

5. Divinity and sacredness associated with medicinal plants

5.1 Spirituality, divinity and sacredness associated with medicinal plants (present vista and future possibilities)

5.2 Spreading awareness and changing mindset of the society from an approach of consumerism to care and conservation of plants.

6. Model demonstration plants at farm level

6.1 Setting up end-to-end Demonstration Models at farm level for cultivation, semi-processing, storage, preservation, and marketing for creating employment, business & entrepreneurial opportunities for the rural youth.

6.2 Development of Agri-Business Entreprenures –An HRD Model

In order to discuss and formulate policy measures on the above theme and sub- themes, this conference will provide a platform for interaction between representatives of manufacturers of drugs from medicinal plants, whole sale and retail traders in botanical drugs and the farmers. The Conference will also invite representatives of Councils of Ayurveda, Unani, Sidha, Homeopathy, Scientists from CSIR , ICMR, ICAR, and Agricultural Universities, representatives of the Govt. and Non-govt. agencies including forest departments, Ayurveda vaidyas, Siddha Experts, Homeopaths and Unani hakims.

You are requested to write to us at your earliest any Key issue on any of the above Sub-themes for detailed discussion at the Conference , to enable us to provide a specific time for the purpose.

It is proposed to publish a **SOUVENIR** to be released by the President of India, containing abstracts of papers, schemes of Govt.Departments for farmers, and maufacturers in the area of medicinal plants, technologies for pre-processing and processing of medicinal plants at farm level. Messages and Advertisements are invited for including in the Souvenir and may kindly be sent on-line at srishandilya@rediffmail.com, sdgarg02@gmail.com and also one hard copy to

THE EDITOR, CONFERENCE SOUVENIR ON DIVINE MEDICINAL PLANTS, PLANTS BASED MEDICINAL PRODUCTs, PANCHAGAVYA AND THEIR ROLE IN INTEGRATED RURAL DEVELOPMENT Gramin Khhetriya Vikas Parishad, 2,VIGYAN LOK,ANAND VIHAR,DELHI-110092.

It is also proposed to bring out a **PUBLICATION** related to the Theme and sub-themes of the Conference. Special articles are invited for this Conference publication. Papers may be sent on-line to and also one hard copy, to

THE EDITOR, CONFERENCE PUBLICATION ON'' DIVINE MEDICINAL PLANTS, PLANTS BASED MEDICINAL PRODUCTs, PANCHAGAVYA AND THEIR ROLE IN INTEGRATED RURAL DEVELOPMENT, GRAMIN, KHHETRIYA VIKAS PARISHAD, 2, VIGYAN LOK, ANAND VIHAR, DELHI-110092.

Note: Gramin Chhetriya vikas Parishad have been bringing out a "GRAM VIKAS JYOTI" magazine for the last twenty five years which introduces to the rural people the various rural development programmes and progress achieved.